e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 11, November 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.521

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 11, November 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0711015

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

“मधु कांकरिया कृत “बादलों में बारूद” यात्रा वृतान्त का समीक्षात्मक अध्ययन”

डॉ.गीता संतोष यादव

सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध-निर्देशक, एस.एम्.आर.के.महिला महाविद्यालय, नाशिक

श्रीमती अनुष्का प्रदीप पाचंगे, शोध-छात्रा, एस.एन.डी.टी.महिला विश्विद्यालय, मुम्बई

I. प्रस्तावना

मधु कांकरिया जी का नाम हिन्दी साहित्य जगत का एक जाना माना नाम है|मधु कांकरिया जी ने हिन्दी की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है| **‘बादलों के बारूद’** उनका बहुचर्चित यात्रा-वृतांत है|हिन्दी में यात्रा-वृतान्त लेखन की उल्लेखनीय परम्परा रही है| मधु कांकरिया जी ने ‘बादलों के बारूद’के द्वारा इस परंपरा को एक सार्थक आयाम दिया है यह कहना मुनासिब होगा अपने को खोजते हुए भूगोल, इतिहास, संस्कृति,पुरातत्व आजीवन, प्रकृति, अलक्षित लोकमन और अदम्य अस्तित्व के कोने-अंतरे झांक लिए हैं। मधु कांकरिया ने परिवर्तन की पदचाप भी सुनी है। उन्होंने अभाओं के लोकतंत्र को भी देखा है और इस प्रक्रिया में जो वृतांत रचा है वह इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर जीवंत है।लोहरदगा और गुमला के आदिवासी अंचल धरधरी को चढाई और पलामू, चूमांग और हिमालय प्रांतर, शिलांग, सुंदरवन और सजनारवाली टापू, चेन्नई, लाख और पैनगोंग, कालडी-इन जगहों पर घूमते हुए मधु कांकरिया ने अनुभवों का एक खजाना एकत्र किया है। अपने अनुभवों को पारदर्शी बनाकर बेहद रचनात्मक भाषा में उन्होंने पाठकों तक पहुंचाया है। इस यायावरी में कहीं कोई पूर्वाग्रह नहीं है। यथार्थ को उसके अधिकाधिक आयामों में देखने, परखने व सहेजने की ईमानदार कोशिश है।

लेखिका ने रूप और विरूप दोनों को देखा है; शब्दांकित किया है। यात्रा करते हुए जरूरी विमर्शों पर ठहरकर उन्होंने 'सभ्यताओं' के सच पर भी रोशनी डाली है। असम, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश जैसी जगहों पर कई तरह की नाइंसाफियाँ देखकर वे लिखती हैं, 'सभ्यता की इन महायात्राओं की नींव में हमारी उदासियां भरी हुई हैं। हर सभ्यता वहां के मूल निवासियों... वहां के आदिवासियों को कुरूप बनाकर ही इतना आगे बढ़ी है। आज हम जाग रहे हैं और चाहते हैं ऐसी व्यवस्था कि इतिहास के वे काले पृष्ठ फिर दोबारा न खुलें।' इस पुस्तक की ऐसी अनेक विशेषताएं इसे अन्य यात्रा-वृत्तांतों में विशेष बनाती हैं।

बादलों में बारूद यात्रा-वृतांत पुस्तक को लेखिका ने अनेक उपशीर्षकों में बाँटा गया है|जैसे,जंगल की ओर,पहाड़,पलामू,और आग, साना-साना हाथ जोड़ि,हिरना देख बूझि बन चरना,बादलों में बारूद,जाल जहाज और मछुवारे,देश में विदेश,बुद्ध,बारूद और पहाड़ देखती चली गयी आदि|

“जंगल की ओर”में आदिवासी संस्कृति अरण्य संस्कृत का चित्रण लेखिका ने किया है|इन्हीं संस्कृति में जिंदगी को संभावनायें,अर्थ और सपने देती अनेक लोककलाओं में से लोककथा करमा पर्व की है |ऐसी मान्यता है कि सात आदिवासी भाइयों का एक आदिवासी परिवार जिसमें करमा सबसे बडा और धरमा सबसे छोटा |जहाँ तक संयुक्त व्यवस्था था घर में खुशहाली थी,सब मिलकर करमा की डाली खेत में गाडते और पूजा करते| दरअसल हमारे सारे पर्व कृषी-संस्कृती से आये हैं |जब धान रोपा जाता है तो हरियाली आती है,उसी की सलामती के लिये और रखरखाव निमित्त करमा पूजा की जाती है|जिससे फसल में कीड़े वगैरे नहीं पड़ें|हाँ,तो करमा बाकी भइयों से ज्यादा कमाने लगा तो अभिमानवश वह अलग हो गया और उसके बाद से ही उसके दुर्दिन शुरू हो गए|उसमें घमंड आने लगा,करमा के दिन उसने करमा पूजा भी नहीं की वरना करमा की डाली को ही उखाडकर फ़ेंक दिया|इससे देवता नाराज हो गए,उसकी फसल बर्बाद हो गयी|बाकी सब भाई सुखी-सलामत रहे|तब उसके भाइयों ने कहा कि चूँकि तुमने करमा की डाली उखाडकर फेंकी इसलिए ऐसा हुआ|अब वह करमा की डाली को खोजने निकला|डाली उसे नदी के अंदर बहती मिलती है|उस डाली को ले वह फिर अपने भाइयों में जा मिलता है| घर की खोई हरियाली खुशियाली वापस लौट आती है|आदिवासियों की अफाट गरीबी का चित्रण भी लेखिका ने किया है| वे ‘नदी किनारे की गीली रेत को खोदकर गड्ढा बना लेते हैं,फिर उसमें जल भर देते हैं,थोड़ी देर बाद पानी की गंदगी नीचे बैठ जाती है और स्वच्छ जल ऊपर तैरने लगता है’ इसे ही चेंचू कहते हैं,देशी फिल्टर’[१] इसी प्रकार

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 11, November 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0711015

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

आदिवासी मान्यता है वे कहते हैं "हमारे यहाँ तेली को देखना भी बहुत अशुभ माना जाता है|सुबह के समय यदि तेली का मुख दिख जाए तो उसको झिड़क देते हैं जिससे उसकी मनहूसियत का प्रभाव घट जाए|कहते हैं कि महाभारत में जब सियार तक ने तेली का माँस खाने से इनकार कर दिया तभी से तेली को अशुभ माना जाने लगा है...लेकिन यदि सुबह-सुबह धोबी दिख जाए तो उसका मुख दिख जाए तो उसका मुख दिखना बहुत शुभ माना जाता है|[२]

आदिवासी समाज में जल,जंगल,जमीन की समस्या अभी तक नहीं सुधरी है-सच ही कहा गया है कि,शायद किसी उदास काली रात में रचा गया होगा यह भूखंड कि आज तक इसके साथ न्याय नहीं हो पाया|जरा,सोचिये,सारे भारत का आठ करोड़ का यह वनवासी समाज कितना बाक्साइट,लोहा,कागज़,कोयला,अभ्रक,खाद्यान,लकड़ी,जडी-बूटी,सब्जी सभी कुछ यह पैदा करता है पर उपयोग क्या करता है? यह तो कागज, लोहा और कोयला तक का उपयोग नहीं करता। बिजली, पेट्रोल, धातु, साइंस, टेक्नोलॉजी और गैस सिलिंडर तो बहुत दूर की बात है। किसी भी प्रकार के प्रदूषण में आदिवासी समाज का हाथ नहीं। यह सिर्फ लकड़ी, बांस, पत्तों, मामूली खाद्यान्न एवं मामूली बर्तन एवं मामूली कपड़ों से अपना काम चला लेता है। **"यह समाज आज भी 'वेस्ट एट रिपेइंग समाज"** है जब कि हमारी संस्कृति अधिक से अधिक 'एक्कायर एंड इन्ज्वाय' की संस्कृति है।"[३] आप ही बताइए कौन सभ्य है और कौन असभ्य ? समर्पण और निष्ठा इतनी इस समाज में कि आज भी यह समाज तीर- धनुष चलाते वक्त एकलव्य परंपरा का पालन करते हुए दाएं हाथ के अंगूठे क इस्तेमाल नहीं करता है कि एक बार जिसे दान में दिया, उसे दे दिया। प्रकृति के साथ भी इतना संवेदनात्मक रिश्ता है कि ये पेड़-पौधे की पूजा करते हैं करमा पर्व के दिन ये पेड़ नहीं काटते हैं। इनके तो नाम तक पेड़-पौधों के नाम पर रखे जाते हैं। और इधर हम हैं कि प्रकृति का दोहन किए जा रहे हैं। आदिवासी समाज के लोग यूकेलिप्टस के पेड़ों की पैदाईश नहीं करना चाहते इसलिए वे इन कतारों को सारे झारखंड में से हटाने की मांग कर रहे हैं, क्यूंकि,इनका लाभ देशी पेड़ों की तरह लोकहितकारी नहीं है। ये धरती का मनो जल खींचकर भूमि को वीरान बना रहे हैं। इनसे न तो किसान को तेल मिलता है और न ही ईंधन और न ही पक्षी इन पर घोंसला बनाते हैं, न ही रैनबसेरा करते हैं। इनसे सिर्फ कागज की लुगदी ही बनाई जाती है जो सिर्फ व्यापारी वर्ग को ही फायदा पहुंचाती है|

पहाड़,पलामू और आग इस खंड में अरण्य संस्कृति के बारे में बताया है| जंगल को जंगलवासी से कोई खतरा नहीं है। जंगल-सभ्यता का मतलब यही है कि जंगल जो उपलब्ध कराता है, उसी के अनुसार जिएं...। जंगल नहीं कहता है कि आप यहां खेती करें... जंगल काटें...। जंगल बिना कटे भी आपका भरण-पोषण कर सकता है। पर लोग हैं कि जंगल-सभ्यता को भी नदी-सभ्यता बनाने पर तुले हैं। आज के समय देखा जाए तो दनादन, सकुआ, सागौन के पेड़ काटे जा रहे हैं-किसलिए? सिर्फ नदी-सभ्यता के लोगों को शानदार फर्नीचर और घरों के सजावटी दरवाजे उपलब्ध कराने के लिए। हम यह नहीं सोचते कि यह पूरी सृष्टि... जल-जंगल-जमीन ही नहीं है। मूल आदिवासी संस्कृति को नकारकर क्या हम अमरीका नहीं बना रहे। इस खंड में लेखिका ने एक घटना के बारे में बताते हुए कहा कि,-गांधी जी हाथ धो रहे थे नेहरू जी पानी गिरा रहे थे। नेहरू जी का ध्यान कहीं और था, इस कारण सारा पानी बेकार गिर रहा था।...इसपर गांधी जी ने कहा, "तुमने कितना पानी बेकार गंवा दिया।" नेहरू जी ने कहा, "यहां तो गंगा बहती है... यहां पानी की क्या कमी इसपर गांधी जी ने जवाब दिया "गंगा क्या सिर्फ हमारे लिए ही बहती है| "[३] इसी प्रकार की एक और घटना के बारे में बताती हैं कि यहाँ आदिवासी लोगों ने पिछले वर्ष श्रम निकेतन में बडी वेराइटी वाली मूंगफली बोई थी-वि बोल्ड मूंगफली। पौधे अभी तैयार भी नहीं हुए थे कि वे समाप्त होने की स्थिति में थे। जब श्रम निकेतन की सहायिका चंद्रमति से पूछा तो उसने अवसाद के साथ कहा, "का बताई भैया, रात को भालू आ जाता है, सब तहस-नहस कर जाता है तो उससे अच्छा है कि हम ही खा लें।"[४]..."अब सोचिए... पहले यह क्षेत्र भालू का ही था... हमने उसे बेघर कर दिया। अब वह क्या करे? क्या खाए-पिए? और सबसे बड़ी बात कि जो आदिवासी जंगल और जानवर को मित्र कहता था, आज नई परिस्थितियों में वह उसे ही चोर कह रहा है क्योंकि आज आदिवासियों के अस्तित्व पर ही संकट है। एक बात और विचारणीय है- आदिवासी दिन भर लकड़ियों के बीच रहता है पर उसके घर में लकड़ी का पलंग और कुर्सी तक नहीं मिलेगा क्यों? इसलिए नहीं कि वह इन्हें बनवा नहीं सकता था, इतना तो वह किसी लकड़हारे से भी करवा सकता था, पर भीतर यथार्थ यह है कि आदिवासियों में उपभोक्तावाद था ही नहीं। बिना जरूरत के वह कभी पेड़ भी नहीं काटते हैं। यह उपभोक्तावाद आदिवासियों ने हमसे सीखा है।"[५]

साना साना हाथ जोड़ि...में लेखिका ने गैंगटॉक के यूमथांग का चित्रण किया है पहाड़ों पर चढ़ना बड़ा ही दुर्गम,बीहड़ और संजीदा होता है|प्रकृति संरक्षण के लिए वे कई तरह के स्लोगन के बारे में बताती हैं जो सचमुच मनुष्य हृदय के बहुत करीब है जैसे-"यदि न होता जंगली स्थान|देश बन गया होता रेगिस्तान|" पहाडों का दुर्गम रास्ता जिसे चौड़ा करने का काम बहुत ही जोखिमपूर्ण होता है वे पहाडी स्त्रियाँ बड़े मनोभाव से कर रही थीं|बातों-बातों में लेखिका को पता चलता है कि, "बड़ा खतरनाक कार्य होगा यह, "पिछले महीने तो एक की जान भी चली गई थी। बड़ा दुःसाध्य कार्य है पहाड़ों पर रास्ता बनाना। पहले डाइनामाइट से चट्टानों को उड़ा दिया जाता है। फिर बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़-मरोड़कर एक आकार के छोटे-छोटे पत्थरों में बदला जाता है, फिर बड़े से जाले में उन्हें लंबी

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

पट्टी की तरह बिछाकर कटे रास्तों पर बाड़े की तरह लगाया जाता है। जरा सी चूक और सीधा पाताल प्रवेश!"[६] यहीं पर एक इलाका है खेदुम,यह लगभग एक किलोमीटर का एरिया है यहाँ पर देवी-देवताओं का निवास माना जाता है|आदिवासियों की यह धारणा है कि जो यहाँ गंदगी फैलाएगा,वह मर जायेगा |इसकी पुष्टी करने के लिए लेखिका ने एक महिला से पूछा-तुम लोग पहाड़ों पर गंदगी नहीं फैलाते...?इसपर उसने जीभ निकालते हुए उत्तर दिया –"नहीं मैडम,पहाड़,नदी,झरने...हम इनकी पूजा करते हैं,इन्हें गन्दा करेंगे तो हम मर जायेंगे|[७]

हिरना देख बूझ बन चरना में लेखिका ने भूख का बड़ा ही बीभत्स चित्रण किया है- आदिवासियों की आफट गरीबी का चित्रण किया है जहाँ माँ की ममता भी सूख जाती है|सर्वग्रासी गरीबी किस प्रकार आदमी की सारी संवेदनाओं को सुखाकर उसकी सारी आदमियत निगल लेती है - उसके गांव में एक प्रसूता ने एक बच्चे को जन्म दिया था। प्रसव के बाद की तेज भूख से वह बेहाल थी। घर में दाना नहीं, पास में फूटी कौड़ी नहीं। आसपास भी सभी भूखे नंगे। भूख की ज्वाला से जब अंतड़ियाँ चटकने लगीं, सिर चकराने लगा, आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा तो उसने अपनी कोठरी के बाहर अपने पुराने कंबल को पर्दा बनाकर टांगा। और जीने की अंतिम चेष्टा के रूप में आंखों में जल और असह्य ज्वाला लिए अपने एक दिन के नवजात शिशु को भूनकर उसका भक्षण किया। और उस जानलेवा भूख से मुक्ति पाई कि मैं यदि जीवित रह पाई तो शिशु फिर हो जाएगा। अविश्वसनीय? है यह घटना ऐसा हो कैसे सकता है?लेखिका ने अविश्वास और क्षोभ पर अच्युत(बतानेवाला) ने अपना सिर झुका लिया, पर उसकी मौन व्यथा कुलबुलाई- मैडम जब उसका बच्चा नहीं दिखा और आसपास के गांववासियों ने उसे घेर-घारकर झकझोरा तो उसने खुद कुबूल किया। तुमने देखा है उसे? हां... अच्युत ने अपना सिर झुका लिया|सचमुच ही गरीबी की अंतिम पायेदान की लकीर है यह घटना |इसी प्रकार की एक आदिवासी घटना का ब्यौरा लेखिका ने किया है जिसे सांसद पवन दीवान ने भी किया था|छत्तीसगढ़ के उस गाँव की |उस गाँव में बारह – तेरह वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वे माँ बन जाती हैं। ऐसी ही एक कम उम्र मां एक पारिवारिक क्लेश के बाद अपमान और अवसाद में मई की उबलती धूप में अपने नवजात बच्चे को गोद में लिए घर से भाग खड़ी हुई। "रास्ते में चौड़े पाट की सूखी नदी। उत्तेजना और आवेग में उसने सूखी रेत भरी आधी नदी भी पार कर ली। जेठ की दुपहरी, तपती रेत और आग बरसाता सूरज। पांव जब जख्मी हो लड़खड़ाने लगे, आगे बढ़ना जब नामुमकिन होने लगा , पैर के फफोले जब फूटने लगे तो उसे ध्यान आया कि उतावले में वह चप्पल पहनना ही भूल गई थी। आधी नदी पार कर चुकी थी, इस कारण से जख्मी पांवों के साथ पीछे लौटना भी मुश्किल, आगे बढ़ना भी नामुमकिन। गर्म रेत पर पड़ी मछली की तरह वह कुछ देर छटपटाती रही। सूरज के नम पड़ने की कोई उम्मीद न थी, अंततः चरम बेबसी में निस्सहाय, निरुपाय और पराजित हो उसने अपने तीन माह के शिशु को गोद से उतारा, तप्त रेत पर लिटाया और पांवपोश की तरह उस पर पैर रख-रखकर उस जानलेवा सूखी रेत भरी नदी को पार किया|"[८]

बादलों में बारूद खंड में लेखिका ने शिलांग की पहाड़ों का चित्रण किया है| आदिवासी स्त्रियों का चित्रण करते हुए लेखिका कहती हैं - आदिवासी स्त्रियाँ संसार की सबसे शक्तिशाली, बंधनहीन और उन्मुक्त स्त्रियां हैं। हमारी कबीलाई संस्कृति की विशेषता ही यही है कि आदिवासियों के यहां मातृसत्तात्मक परिवार इस 21वीं सदी में भी चलते हैं। इनके यहां संपत्ति का उत्तराधिकार पुत्रियों को मिलता है। पुत्रियों में भी सबसे छोटी पुत्री को सबसे अधिक मिलता है। यहां शादी के बाद लड़के ससुराल जाते हैं। यहां संतान पिता का नहीं माँ का सरनेम लगाते हैं।'लक्ष्मण डिंगडा ने बताया चूंकि "मेरी मां का नाम है बॉवी डिंगडा जब कि मेरे पिता का सरनेम अलग है, उनका सरनेम लिंगड़ा है क्योंकि उन्होंने अपनी मां का सरनेम लगाया हुआ है।"[९] आदिवासी संस्कृति के अलावा इस खंड में लेखिका ने चेरापूँजी,शिलांग आदि की प्राकृतिक चित्रण भी किया है|

जाल,जहाज और मछुवारे इस खंड में लेखिका ने जहाँ 'वन ड्राप ऑफ़ इंक मे मेक मिलियन थिंक'की बात कही है वहीं विदेशियों के भारत के प्रति अपना नजरिया व्यक्त किया है|अक्सर भारत आये विदेसी सैलानियों का शोषण दूकानदार किस प्रकार यहाँ करते हैं इसके बारे में बताया है|एक विदेशी शैलानी से जब वे पूछती हैं इन्डियन कैसे लगे तो वह फुर्ती से बोली-"इंडियन चीट। बोलने का अंदाज ऐसा जैसे जवाब उसने पहले से ही सोच रखा था। उसने कोलकाता के न्यू मार्केट के एक शो-रूम से चांदी की चार चूड़ियां खरीदी थी। उसके कनाडा में तो बिना बिल के माल बेचने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पर यहां के दुकानदार ने उसे बिना बिल के ही चूड़ियां थमा दी। उसने जब बिल की फरमाइश की तो दुकानदार ने कहा कि उसके यहां बिल सिस्टम है ही नहीं। उसके कंधे फिर उचके-मैंने खरीद ली| बाद में पता चला वे चांदी की नहीं, गोल्ड कोटेड बेंटेक्स की थीं|"[१०] लेखिका को भी पूरे यात्रा के दौरान इस प्रकार के कई मीठे धोके खाने का अहसास हुआ |जैसे की भुवनेश्वर का चिल्का झील| वहां धोखा दिया डॉलफिन मछली ने ट्रेवलिंग एजेंसी ने टिकट करवाते वक्त ऐसे चित्र दिखाए कि मधु कांकरिया जी डर से सिकुड़ गयी,लगा कि जरा सी भी असावधानी से डॉलफिन उनकी स्टीमर से कहीं उन्हें ही न छीन ले|पर साढ़े तीन घंटे की जल-यात्रा में डॉलफिन का माथा –मुंड कुछ भी समझ में नहीं आया|

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

देश में विदेश खंड में लेखिका ने विदेश में रहते हुए भी अपने देश जैसे अनुभव के बारे में तो यार-दोस्तों से खूब सुना था|कहीं लंदन में बसा छोटा सा भारत तो कहीं न्यूयॉर्क में मिनी इंडिया|लेखिका ने तो यार-दोस्तों से खूब सुना था। पर अपने ही देश में विदेशी होने का अनुभव अभूतपूर्व था। पूरा उत्तर भारत घूम चुकी थी, यहां तक कि उत्तर-पूर्व में सिक्किम, असम, मेघालय आदि भी, पर कहीं भी भाषा ने इतना नहीं मारा, जितना चेन्नई की भाषा ने कहर बरपाया। लेखिका जब कोलकाता से निकली तो सोचा था कि थोड़ी हिंदी, थोड़ी अंग्रेजी मिलाकर काम चला लूंगी, पर यहां के लोगों की भाषा और संस्कृति प्रेम देखकर दंग रह गई। हिंदी का तो खैर यहां देशनिकाला है ही। पर तगड़ी तमिल भाषा की तुलना में अंग्रेजी भी दबती नजर आई। सुशिक्षित और अंग्रेजी जानने के बावजूद तमिल आपस में तमिल भाषा ही बोलना पसंद करते हैं। उत्तर भारतियों की तरह उनमें न तो अपनी भाषा के प्रति कोई कुंठा है और न ही रोब गांठने के लिए अंग्रेजी झाड़ने की मनोवृत्ति। आम तमिल स्वाभाविक जीवन जीने में विश्वास करता है। अपनी सत्ता, संपदा, समृद्धि और उच्च होने का बोझ वह अपने सिर पर लादकर नहीं चलता है। बड़े से बड़े अफसर और धनाढ्य भी व्यर्थ के दिखावे से दूर आधी लुंगी यानी घुटनों के ऊपर तक बंधी लुंगी में देखे जा सकते हैं। कोयंबटूर में हुए तमिल इंटरनेशनल समिट की सफलता देखकर तो लेखिका दंग रह गई। सिर्फ दक्षिण के भी इकलौते राज्य की भाषा तमिल और इतना विराट् अंतर्राष्ट्रीय आयोजन और वह भी तीन दिनों तक। तमिल भाषा की खासियत यह है कि वह जितनी समृद्ध है उतनी ही जटिल भी। संस्कृत की तासीर में रची-बसी होने पर भी वह हिंदी से कोसों दूर है। जिस चीज ने यहां आते ही लेखिका को प्रभावित किया वह थी आत्मा को सुकून और मन को शांति देती यहाँ की हरियाली |इसी प्रकार यहाँ के मछुवारों के बीच एक जबजस्त अंधविश्वास प्रचलित है कि कितना भी आंधी-तूफान आये मछुअवारे का जीवन तब तक सुरक्षित है जब तक उसकी पत्नी एकनिष्ठ है,पतिव्रता है|जिन्दगी की कठोरता से तपे मछुवारे जाल लेकर जब नौका तक आते हैं और यदि नौका के आगे कुछ रखा होता है तो वे उसे लांघते नहीं,दूसरी ओर से चले जाते हैं| ये हमारी भारतीय अन्धविश्वासी संस्कृति है तो दूसरी तरफ क्लेयर जैसी विदेशी महिला का भी उदाहरण दिखाई देता है| जो बिनब्याही माँ है और अपने साथी को वह अपने बेटी के पिता के रूप में ही स्वीकार करती है |उसे अपने हस्बैंड का दर्जा देना नहीं चाहती|ये हैं देश और विदेश की सांस्कृतिक विभिन्नतायें|

'बुद्ध बारूद और पहाड़' में इस खंड में लेखिका ने लद्दाख के उन सैनिकों का के बारे में बताया है जो भारतीय माटी के लिए मर मिटे हैं|मेजर शैतान सिंह के बारे में भी उन्होंने इस खंड में उल्लेख किया है| भारतीय फौज की दुर्दशा का चित्रण भी किया है-भारत और चीन के युद्ध के बारे में बताते हुए वी.जे. वर्गीस ने लिखा है कि,'भारतीय सेना के पास गरम कपडे भी पूरे नहीं थे|उनकी जैकेट भी कोल्डप्रूफ नहीं थी|वे मामूली जैकेट थी और थ्री नॉट थ्री (१९४५ में निर्मित दूसरे विश्वयुद्ध के हथियारों) से लड़ रहे थे जबकि चीनी सेना के पास ए.के.४७ थी और,हमारी सेना को ढंग का एक जनरल नसीब नहीं हुआ था|

'देखती चली गई' खंड इस यात्रा - संस्मरण का अंतिम खंड है|इस खंड में लेखिका ने वेद -पुराणों की ओर पाठकगण का ध्यान खींचा है|किस प्रकार सभी धर्मों के पुरोहित कम उम्र के बच्चों को अपना टारगेट बनाते हैं|वे छोटी उम्र से ही उन्हें कड़े बंधन नें रखते हैं,उन्हें बाहरी दुनिया से काटकर रखा जाता है|

अस्तु,कहा जा सकता है कि,बादलों में बारूद यात्रा-वृतांत के माध्यम से लेखिका मधु कांकरिया जी ने सम्पूर्ण झारखण्ड की आदिवासी संस्कृति,प्रकृति चित्रण,राजस्थान के आदिवासी ,देश-विदेश के संस्कृति आदि का चित्रण किया है|भारतीय सेना की विडंबनाए,मछुवारी संस्कृति की विश्वास और मान्यताओं का चित्रण किया है|भारत के प्रति विदेशी सैलानियों के नजरिये का चित्रण किया है| भारत की एकता में विविधता को स्पष्ट किया है|

सन्दर्भ

1. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -१५
2. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -१६
3. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -४०
4. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -४०
5. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -४१
6. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -६१
7. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -६९
8. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -८०
9. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली-११००२ पृष्ठ -९१
10. बादलों में बारूद : मधु कांकरिया :किताब प्रकाशन ४८५५-५६/२४ ,नई दिल्ली- ११००२ पृष्ठ -११५

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com